

विचार बिन्दु

उपदेश के बजाय कहीं ज्यादा हम करके सीखते हैं। -बर्क

राजस्थान का पुनर्गठन - सुशासन, क्षेत्रीय आकांक्षाएं और तीव्र विकास की आवश्यकता

राजस्थान 3,42,239 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के साथ भारत का सबसे बड़ा राज्य है। यह देश के कुल क्षेत्रफल का लगभग 10.41% हिस्सा साझा करता है। इतने विशाल भू-भाग को अकेले जयपुर में बैठे प्रशासनिक तंत्र से नियंत्रित करना अत्यंत कठिन है। सुदूर दक्षिण में बांसवाड़ा या धूर पश्चिम के जैसलमेर से राजधानी की दूरी 500 से 600 किलोमीटर है। इस अत्यधिक दूरी के कारण नीतियों का क्रियान्वयन धीमा होता है और आम जनता के लिए सुशासन महज एक कागजी नारा बनकर रह जाता है।

वर्ष 2000 में जब मध्य प्रदेश से छत्तीसगढ़, बिहार से झारखंड और उत्तर प्रदेश से उत्तराखंड को अलग किया गया, तो इसके परिणाम अपूर्व रहे। विभाजन के समय छत्तीसगढ़ एक पिछड़ा इलाका था, लेकिन आज यह देश के शीर्ष बिजली उत्पादक राज्यों में 9वें स्थान पर है। यहाँ की प्रति व्यक्ति आय 12,240 से बढ़कर 1,40,000 से अधिक हो चुकी है, और गरीबी दर 49.4% से घटकर 17.9% पर आ गई है। ये ही स्थिति उत्तराखंड एवं झारखंड की है। इन अंककों से यह निष्कर्ष निकलता है कि छोटे राज्य संसाधनों का बेहतर दोहन करने और नीतिगत फैसलों को तेजी से लागू करने में अधिक सक्षम होते हैं।

इसी तर्ज पर दक्षिणी राजस्थान के आदिवासी अंचल (वागड और मेवाड़) में लंबे समय से एक अलग भौल प्रदेश की मांग उठ रही है। भारत आदिवासी पार्टी BAP और विभिन्न जनजातीय संगठनों के नेतृत्व में यह आंदोलन वर्तमान में अत्यंत तीव्र हो चुका है। इस अलग राज्य की मांग की जड़ें मानव धर्म से जुड़ी हैं, जहाँ 17 नवंबर 1913 को समाज सुधारक गोविंद गुरु के नेतृत्व में दमनकारी नीतियों के खिलाफ शांतिपूर्ण सभा कर रहे 1,500 से अधिक निर्दोष भौल आदिवासियों को ब्रिटिश सेना ने गोलीयों से भून दिया था। इस वीरभक्त नरसंहार की उपेक्षा का दर्द आज भी स्थानीय जनता महसूस करती है, क्योंकि दशकों की मांग के बावजूद इसे राष्ट्रीय स्मारक का दर्जा नहीं मिला है। स्थानीय लोगों का मानना है कि यदि यह क्षेत्र जयपुर या दिल्ली की राजनीति से दूर एक अलग राज्य के अधीन होता, तो इस पावन भूमि को यह सम्मान और विकास बहुत पहले मिल चुका होता।

बुनियादी ढांचे की उपेक्षा का सबसे बड़ा उदाहरण रालाम-बांसवाड़ा-डूंगरपुर रेल लाइन परियोजना है। वर्ष 2011 में इस परियोजना की घोषणा के बाद इसे वित्तीय अडचनों के कारण ठंडे बस्ते में डाल दिया गया था। यद्यपि रेल मंत्रालय ने हाल ही में नीमच-बांसवाड़ा-दाहो-नंदुरबार (380 किमी) के नए रेल ट्रैक के फाइनल लोकेशन सर्वे के लिए बजट स्वीकृत किया है, लेकिन आजादी के सात दशकों बाद भी बांसवाड़ा जिला भारत के रेल मानचित्र पर अपनी मुख्य पहचान के लिए संघर्ष कर रहा है। यह देरी साबित करती है कि जयपुर की बड़ी राजनीति में सुदूर दक्षिण के इस खनिज, जल और वन संपदा को यह सम्मान और विकास बहुत पहले मिल चुका होता।

इस प्रशासनिक उपेक्षा और भौगोलिक दूरी का सबसे बड़ा खामियाजा यहाँ की जनता को न्यायिक प्रणाली में मुगलता पड़ता है। उदयपुर में राजस्थान उच्च न्यायालय की स्थायी पीठ (High Court Bench) स्थापित करने की मांग पिछले साढ़े चार दशकों से लगातार की जा रही है। वर्तमान व्यवस्था के तहत मेवाड़ और वागड (उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़, राजसमंद) के गरीब आदिवासियों और आम नागरिकों को अपने छोटे-बड़े मुकदमों की पैरवी के लिए 500 से 550 किलोमीटर दूर जोधपुर स्थित मुख्य पीठ जाना पड़ता है। मेवाड़-वागड हाईकोर्ट के बीच संघर्ष समिति और बार एसोसिएशन के

तत्वावधान में अधिवक्ता व स्थानीय जनता लंबे समय से आंदोलनरत हैं, भूख हड़तालें कर रहे हैं और हर महीने की 7 तारीख को न्यायिक कार्यों का बहिष्कार करते हैं। आजादी से पहले उदयपुर (मेवाड़ राज्य) का अपना स्वतंत्र उच्च न्यायालय था, लेकिन एकीकरण के बाद इस अधिकार को छीन लिया गया। एक ओर जहाँ राजधानी जयपुर में 1977 में पुनः पीठ स्थापित कर दी गई, वहीं देश के सबसे बड़े आदिवासी बहुल संभाग को सस्ता, सुलभ और त्वरित न्याय देने के नाम पर दशकों से केवल आश्रय मिल रहे हैं। यह विडंबना दर्शाती है कि जब तक इस अंचल का अपना स्वतंत्र प्रशासनिक ढांचा नहीं होगा, तब तक न्याय और विकास दोनों आम जन की पहुँच से दूर रहेंगे।

तीक इसी तरह, पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी राजस्थान को अलग कर मरु प्रदेश बनाने की मांग भी राजस्थान के एकीकरण (1956) के समय से ही समय-समय पर उठती रही है। प्रस्तावित मरु प्रदेश का क्षेत्रफल लगभग 2,13,887 वर्ग किलोमीटर होगा, जो कि वर्तमान राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का लगभग 62% है और इसकी आबादी 2.81 करोड़ से अधिक है। इसमें राजस्थान के लगभग 13 से 20 जिले शामिल हैं। यह क्षेत्र अब देश का बड़ा पेट्रोलियम, कृद ऑयल, प्राकृतिक गैस (बाडमेर-जैसलमेर बेसिन) और सोर ऊर्जा का हब बन चुका है। आंदोलनकारियों का आरोप है कि मरुस्थलीय क्षेत्र से भरपूर राजस्व लेने के बावजूद यहाँ की बुनियादी सुविधाओं के विकास पर ध्यान नहीं दिया जाता और विशाल आकार के कारण जयपुर में बैठे अधिकारियों को मरुस्थल की जमीनी विवशताओं का सही आकलन नहीं हो पाता है।

अंततः, राजस्थान का विभाजन कोई राजनीतिक बिखराव नहीं, बल्कि प्रशासनिक विकेंद्रीकरण (Administrative Decentralization) की एक तार्किक आवश्यकता है। जब तक सत्ता और न्याय का केंद्र (राजधानी और उच्च न्यायालय) जनता के भौगोलिक रूप से करीब नहीं होगा, तब तक अंतिम छोर पर बैठे गरीब और आदिवासी नागरिक को उसका हक नहीं मिल पाएगा। छत्तीसगढ़, झारखंड और उत्तराखंड की तर्ज पर यदि राजस्थान का भी वैज्ञानिक और प्रशासनिक आधार पर पुनर्गठन किया जाए, तो नए राज्यों को अपनी विशिष्ट समस्याओं के अनुसार बजट, नीतियाँ और न्यायिक प्रणाली बनाने की आजादी मिलेगी। अब समय आ गया है कि देश के सबसे बड़े राज्य की गरीब जनता के आर्थिक उत्थान, सुलभ न्याय और सुशासन की वास्तविक स्थापना के लिए इस पुनर्गठन पर राष्ट्रीय स्तर पर गंभीरता से विचार किया जाए।

-अतिथि सम्पादक,
डा. पी. सी. केंडारिया,
पूर्व प्रोफेसर एवं मुख्य मूढा वैज्ञानिक
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, उदयपुर

राशिफल शनिवार 6 जून, 2026

द्वितीय ज्येष्ठ मास (अधिक), कृष्ण पक्ष, षष्ठि तिथि, शनिवार, विक्रम संवत् 2083, श्रवण नक्षत्र प्रातः 6:03 तक, ऐन्द्रयन योग दिन 10:04 तक, गर करण दिन 2:01 तक, चन्द्रमा आज सायं 7:04 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मेघ, बुध-मिथुन, गुरु-मिथुन, शुक-मिथुन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज सर्वाथि सिद्धि योग प्रातः 6:03 तक है। रवियोग प्रातः 6:07 से आरम्भ होगा। द्विपुष्कर योग रात्रि 2:42 से आरम्भ होगा। आज भद्रा रात्रि 2:42 से आरम्भ होगी। पंचक सायं 7:04 से आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघडिया: शुभ 7:19 से 9:01 तक, चर 12:25 से 2:08 तक, लाभ अमृत 2:08 से 5:32 तक।
राहुकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:36, सूर्यास्त 7:14

मेघ	सिंह	धनु
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक परेशानियों दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।	अस्त-व्यस्त दिनचर्या एवं स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।	व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। चर्चेत कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।
वृष	कन्या	मकर
व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।	आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।	मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजना/समय बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।
मिथुन	तुला	कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।	घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है।	आज अनर्गल कार्यों में समय खर्च हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। आज घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।
कर्क	वृश्चिक	मीन
परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी।	परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिवार के सदस्यों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।	आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटकल/हवाला बनाने से बचना चाहिए। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

जरूरी है जल-संकट से मुक्ति



डॉ. अरुणा व्यास

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा "वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान" धीरे-धीरे जन आंदोलन बनाता जा रहा है। यह महत्वपूर्ण है कि इस अभियान के तहत मुख्यमंत्री की पहल पर 2 लाख 67 हजार 837 जल संचयन कार्यों को प्रारंभ किया गया और निरंतर मोनिटरिंग करते हुए इन्हें पूरा किया जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र सचने हाल ही अपनी एक रिपोर्ट में कहा है कि पानी की कमी को समय रहते नहीं रोका गया तो विश्व गंभीर जल संकट के दौर से गुजरेगा। कृषि की बढ़ती जरूरतों, खाद्यान्न उत्पादन, ऊर्जा उपभोग, प्रदूषण और जल प्रबंधन की कमजोरियाँ की वजह से स्वच्छ जल पर निरंतर दबाव बढ़ रहा है। राजस्थान वैसे भी बहुत कम वर्षा और जल क्षेत्र में अभावों से जूझता प्रदेश रहा है। इस दृष्टि से 'वंदे गंगा जल संरक्षण' अभियान दीर्घकालीन रूप में राजस्थान को जल संकट से जूझने के साथ जल संरक्षा में अग्रणी करेगा।

हमारे देश का जल प्रबंधन रिपोर्टों की खस कोई अच्छा नहीं है। खसकर जलवायु परिवर्तन के इस दौर में भी जल प्रबंधन की दिशा में हमारे यहाँ अभी भी

खास कोई काम हो नहीं रहा है। उलट जल, जंगल, जमीन, हवा और जैव विविधता का जितना नुकसान पिछले कुछ वर्षों में हुआ है, उतना पहले कभी नहीं हुआ। देश में उपलब्ध जल संसाधनों का बड़ा हिस्सा आज भी खेती में जाता है, पीने के पानी का ही जल संकट है तो समझा जा सकता है कि खेती के लिये पानी की स्थिति आने वाले समय में क्या रहने वाली है। जल संकट कोई नई समस्या नहीं है परन्तु तमाम विकास के बावजूद जल प्रबंधन की दिशा में देश अभी भी बेहद पिछड़ा हुआ है। ऐसा भी नहीं है कि प्रबंधन की दक्षता का हमारे यहाँ अभाव है परन्तु सुलझी हुई सोच से न जाने क्यों जल प्रबंधन को हमने अपनी प्राथमिकता में रखा ही नहीं है। सुप्रसिद्ध पर्यावरणविद्, लेखक अनुपम मिश्र की पुस्तक 'आज भी खरे हैं तालाब' बहुत अधिक लोकप्रिय हुई है। इसे उन्होंने जल संरक्षण प्रेरणा के आलोक में कॉपीराइट मुक्त कर दिया था। जल संकट के इस दौर में इस पुस्तक को हर आम और खास को एक बार जरूर पढ़ना चाहिए।

इसलिये कि इसमें जल संस्कृति संरक्षण की हमारी समृद्ध परम्परा का ही आख्यान नहीं है बल्कि ऐसे दृश्यालेख हैं जिनसे पानी बचाने, संग्रहित करने के लिये स्वयमेव प्रेरित हुआ जा सकता है। अनुपम मिश्र अपने लिखे में आंकड़ों, तथ्यों और महत्वपूर्ण शोध निष्कर्ष तो रखते हैं परन्तु किस्सागोई में। पुस्तक में तालाबों की हमारी संस्कृति का जो लेखा-जोखा है, वह वर्तमान समय के जल संकट का जल सुझाता नये सिरे से इस संस्कृति पर फिर से विचार करने पर मजबूर करता है।

पुस्तक को एक इकाई का आरंभ इस प्रश्न से है, 'कौन थे अनाम लोग?' पाठक चौंकेंगे परन्तु फिर लेखक इसका उत्तर खुद ही अगली पंक्ति में देते हुए कहता है, "सैकड़ों, हजारों तालाब अचानक शून्य से प्रकट नहीं हुए थे। इनके पीछे एक इकाई थी बनवाने वालों की तो दहाई थी बनाने वालों की। यह इकाई, दहाई मिलकर सैकड़ों, हजार बनतीं वाली। लेकिन पिछले 200 बरसों में नए किस्म की थोड़ी सी पढ़ाई पढ़ गए समाज ने इस इकाई, दहाई, सैकड़ों, हजारों को शून्य ही बना दिया। इस नये समाज के मन में इतनी भी उत्सुकता नहीं बची कि उससे पहले के दौर में इतने सारे तालाब भला कौन बनाता था?" सोचिए! जिस देश में पानी सहेजने के लिये तालाबों की लूटी-अलूटी परम्परा रही है, वहाँ आज तालाब बनाना तो दूर पहले के जो तालाब बने थे, उन्हें मिटाकर जल संरक्षण की हमारी संस्कृति का ही विलोपन किया जा रहा है। परम्परा से बने बहुत से तालाब अभी भी अपना वजूद रखे हुए हैं परन्तु विडम्बना यह भी है कि वहाँ पानी आने की कोई व्यवस्था नहीं है। उनकी आगोर भूमि पर आबादी बढ़ गयी है या फिर तमाम जल आवगमन के रास्ते अवरूद्ध कर दिये गये हैं।

जल संरक्षण के लिये तालाबों के निर्माण, बावडियों के विकास और उसमें समाज की भूमिका पर देशभर में घुम-फिर कर आख्यान संजोते लेखक ने जल प्रबंधन की सोच के साथ ही तालाबों की संस्कृति से विमुख होते जा रहे समाज की नज्ज को भी टटोला है। जल संरक्षण के प्रतीक तालाबों से कैसे हुआ समाज विमुख? इसकी रोचक दास्तां अनुपम मिश्र के शब्दों में, '...राज बदला अंग्रेज आए। सबसे पहले उन्होंने

इस फिजूलखर्चों को रोका और सन् 1831 में राज की ओर से तालाबों के लिए दी जाने वाली राशि को काटकर एकदम आधा कर दिया। अगले 32 बरस तक नए राज की कंजूसी को समाज अपनी उदारता से ढककर रखे रहा। तालाब लोगों के थे, सो राज से मिलने वाली मदद के कम हो जाने, कहीं कहीं बंद हो जाने के बाद भी समाज तालाबों को संचाले रहा। बरसों पुरानी स्मृति ऐसे ही नहीं मिट जाती...उसी दौर में दिल्ली में नल लगने लगे थे। इसके विरोध की एक हल्की सुरीली सी आवाज सन् 1900 के आस-पास विवाहों के अवसर पर गाई जाने वाली 'गारियों, विवाह-गीतों' में दिखी थी। बावत जब पंगत में बैठती तो रियाजों "फिरंगी नल मत लगवाय दियो" गीत गाती। लेकिन नल लगते गए और जगह-जगह बने तालाब, कुंए और जगह-जगह के बदले अंग्रेज द्वारा नियंत्रित 'वाटर वर्क्स' से पानी आने लगा।"

कभी हमारे यहाँ अच्छे कार्य करने का मापदंड तालाब बनाने से था। इसीलिये पुस्तक के आरंभ के एक किस्से में कुड़न किसान की कहानी मन को छू लेती है। 'पाटन क्षेत्र के चार बहुत बड़े तालाबों को इस कहानी से जोड़ते मिश्र तालाबों की संस्कृति को आगे बढ़ाते हैं। किस्से दर किस्से में वह बताते जाते हैं कि किसी तालाब को राजा ने बनाया तो किसी को रानी ने, किसी को साधारण गृहस्थ ने, विधवा ने बनाया तो किसी को किसी असाधारण साधु-संत ने-जिस किसी ने भी तालाब बनाया, वह महाराज या महामाया कहलाया। एक कृतज्ञ समाज तालाब बनाने वालों को अमर बनाता था और लोग भी तालाब बनाकर समाज के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते थे।

तब तालाब बनते थे, वर्षों के समय उनमें पानी आता था...लंबालंब जब तालाब भरते तो बाकायदा वह उत्सव बन जाता। तालाब का पूरा भरना, सिर्फ एक घटना नहीं आनंद होता, मंगलसूचक होता, उत्सव होता। महोत्सव होता। यह प्रजा और राजा को घाट तक ले आता। तालाब नहीं वह पानी का महत्व था। पानी संरक्षण की सोच के ऐसे उत्सव से ही तो बना हमारा यह समाज। इसलिये कि तब लोग अच्छे अच्छे काम करते जाते थे। लेखक के अनुसार इस सदी के प्रारंभ तक आषाढ़ के पहले दिन से भादो के अंतिम दिन तक कोई 11 या 12 लाख तालाब भर जाते थे-और अगले जेट तक वरुण देवता का कुछ न कुछ प्रसाद बाँटते रहते थे। और अब हाल यह है कि इनमें से चौथाई तालाब ही बचे नहीं है। जब तालाब ही नहीं हैं तो वर्षा से जो जल बरसता है, उसके संरक्षण की तो बात ही कहां की जा सकती है!

तालाबों की हमारी संस्कृति सभ्यता के वजूद से जुड़ी रही है। आज सभ्यता जल संकट से ही जूझ रही है। इस दौर में हमारी तालाब संस्कृति के जरिये जल संरक्षण को फिर से जीवंत कर हम जल समस्या का बड़े स्तर पर निदान कर सकते हैं। कल नहीं, आज ही इस पर विचारने की जरूरत है। मानसून से पहले तालाबों के हमारे अतीत में जाकर हम यदि जल संरक्षण के लिए प्रयास करते हैं तो बरखा के पानी को ही सहेज नहीं पाएंगे बल्कि भविष्य के जल-संकट से मुक्ति में भी अपना सहयोग दे सकेंगे।

-डॉ. अरुणा व्यास,
पर्यावरण एवं संस्कृति
अध्ययता
स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक

स्वधर्म, स्वभाषा और स्वराज्य : शिव राज्याभिषेक का वैश्विक संदेश



डॉ. विशाला शर्मा

शिवराज्याभिषेक दिवस भारतीय इतिहास का एक विशेष अभिधान है, जो मात्र एक सम्राट के राजतिलक का उत्सव नहीं, अपितु विदेशी पराधीनता को कटौती जंजीरों के विरुद्ध राष्ट्र के स्वाभिमान, शाश्वत न्याय और लोक-

कल्याणकारी सुशासन के उदय का पवन शंखनाद है। सन् 1674 की जब ऐतिहासिक ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी, जब दुर्गराज रायगढ़ की प्राचीन छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्यारोहण की साक्षी बनीं, वास्तव में काल के कपाल पर अंकित एक युगपरिवर्तनीय क्षण था। इसी पावन बेला में हिंदवी स्वराज्य की दिव्य संकल्पना ने एक संप्रभु और अखंड राष्ट्र के रूप में आकार लिया, जिसने सदियों की अधिचारी दासता को चीकर स्वतंत्रता के एक नए स्वर्णिम युग का सूत्रपात किया। न्याय और धर्म की स्थापना और अपने राज्य को एक स्वतंत्र राष्ट्र का दर्जा दिलाने हेतु छत्रपति शिवाजी महाराज ने संपूर्ण जीवन पर्यंत प्रयास किया। आपका अवतरण उस युग की महती आवश्यकता था, जब विदेशी आक्रांताओं और आदिवासी कुतुबशाही सुल्तानों के अत्याचारों से त्रस्त होकर संपूर्ण वसुंधरा कराह रही थी। उन्होंने मुगलों की क्रूर नीतियों

और धार्मिक कट्टरता को पराजित कर समाज संस्कृति, संतो और मंदिरों की रक्षा की और सांस्कृतिक पुनरुत्थान का शंखनाद किया। उनके स्वराज्य में न्याय केवल शक्तिशालियों के लिए नहीं, बल्कि समाज के अंतिम छोर पर रखे व्यक्ति के लिए भी सुलभ था। युगप्रवर्तक छत्रपति शिवाजी महाराज के हृदय में अपनी प्रजा के प्रति शासक का नहीं, अपितु एक वास्तव्यमयी पिता का भाव था। उनके साम्राज्य में दैयत केवल जनमानस नहीं, बल्कि उनकी अपनी संतान थीं; जहाँ कृषकों का पसीना, व्यापारियों की समृद्धि और महिलाओं का स्वाभिमान राज्य की संप्रभुता के सर्वोच्च स्तंभ थे। जन-कल्याण और लोक-हित के प्रति उनकी यही निष्ठा आज भी संपूर्ण विश्व में एक आदर्श शासक के रूप में वंदनीय है।

उनका अनुभव ऐसा था कि रणचंडी के आव्हान पर भी सैनिकों को नीति का पाठ स्मरण रहता था युद्ध की विधीभिका में भी हठी-भरी फसलें अक्षुण्ण रहती थीं। और शत्रु पक्ष की भी महिलाएँ व बालक पूर्णतः सुरक्षित और सम्मानित थे। नर्तकी या दासी को ले जाने पर पूर्ण प्रतिबंध था। युद्ध के दौरान धार्मिक स्थलों को हाथ भी नहीं लगाया जाता था। जब प्रकृति ने सूखे और अकाल का वज्रपात किया, महाराज ने प्रजा पर करों का बोझ लादने के बजाय उनके आँसू पोछे, किसानों को लगान मुक्त किए और उन्हें नव-जीवन देने के लिए बीज व बैल निःशुल्क उपलब्ध कराए। वे केवल भूमि के विजेता नहीं, अपितु कोर्ट-कोर्ट हदयों के अधिपति थे।

छत्रपति शिवाजी महाराज का जीवन केवल युद्धों और विजयों की गाथा नहीं है, बल्कि यह एक लोक-कल्याणकारी, न्यायप्रिय और दूरदर्शी शासन व्यवस्था का स्वर्णिम दस्तावेज है। उनका हिंदवी स्वराज्य केवल एक राजनीतिक सत्ता नहीं, बल्कि

स्वाभिमान, राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक पुनरुत्थान का एक जीवंत महाकाव्य था। उनकी इस गौरवशाली प्रशासनिक और रणनीतिक यात्रा में कार्यकुशलता के लिए उन्होंने आठ मंत्रियों की एक परिषद बनाई, जिसे अष्टमहान मंडल कहा जाता था। यह आधुनिक कैबिनेट व्यवस्था का शुरुआती रूप था। जागीरदारी प्रथा को समाप्त कर अधिकारियों को नकद वेतन देने की शुरुआत की, जिससे भ्रष्टाचार पर लगातार निगाहें उठाने में केवल अंधेड़ किलों का निर्माण किया, बल्कि भारत की पहली आधुनिक नौसेना भी खड़ी की, जिसके कारण उन्हें भारतीय नौसेना का जनक कहा जाता है। महाराज का लक्ष्य किसी एक संघ्रदाय का राज्य स्थापित करना नहीं, बल्कि इस भूमि के मूल निवासियों को अपनी विपत्ति खुद तूल करने का अधिकार देना था। अपने फारसी भाषा के स्थान पर राज्य व्यवहार कोष बनवा कर संस्कृत और स्थानीय भाषाओं एवं मराठी को प्रशासनिक बढ़ावा दिया। मुगलों की विशाल सेना के सामने गुरिल्ला युद्ध नीति का उपयोग कर उन्होंने यह सिद्ध किया कि संकल्प और रणनीति से किसी भी बड़ी शक्ति को झुकाया जा सकता है।

छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित सुशासन, राष्ट्रभक्ति और जनकल्याण के आदर्श आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। यह दिन हमें याद दिलाता है कि जब नेतृत्व निःस्वार्थ, पराक्रमी और न्यायप्रिय हो, तो विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी एक अजेय और कल्याणकारी राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है।

छत्रपति शिवाजी महाराज का शासनकाल महिला अधिकारों और उनकी गरिमा की रक्षा के लिए इतिहास में मील का पत्थर माना जाता है। उनके राज्य में महिलाओं की सुरक्षा केवल

एक कानून नहीं, बल्कि एक सर्वोच्च संस्कार था। महिला उद्योइन, शीलभंग या उनके अपहरण के खिलाफ शून्य-सहनशीलता की नीति अपनाई थी। दोषी पाए जाने पर अपराधियों को मृत्युदंड या हाथ-पैर काटने जैसे अत्यंत कठोर दंड दिए जाते थे, चाहे वह अपराधी कितना भी बड़ा अधिकारी या सैनिक क्यों न हो। इसका सबसे बड़ा उपकरण गोंय के मुखिया का मामला है। जब उसने एक असाध्य महिला के साथ दुर्व्यवहार किया, तो महाराज ने बिना किसी देरी के उसके दोनों हाथ और पैर काटने का आदेश दिया था। इस एक फैसले ने पूरे राज्य में अपराधियों के भीतर खोफ पैदा कर दिया था। युद्ध के मैदान में भी महाराज का नैतिकता का नियम लागू रहता था। कल्याण के सुबेदार की वृक्ष का प्रसंग प्रसिद्ध है। जब मराठा सेना ने कल्याण पर विजय प्राप्त की और सुबेदार की सुंदर बहू को महाराज के सामने उतारार के रूप में पेश किया, तो महाराज ने उसे अपनी माता के समान बताते हुए उसमामन और आभूषणों के साथ उससे परिवार के पक्ष वापस भेज दिया।

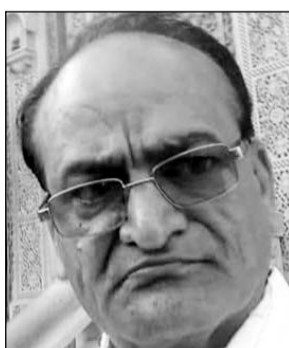
शिवाजी महाराज भली-भांति जानते थे कि स्वराज्य की असली ताकत खेतों में काम करने वाला किसान है। उन्होंने मुगलों की उस दमनकारी व्यवस्था को उखाड़ फेंका जो किसानों का खून चूसती थी। महाराज का अपनी सेना को स्पष्ट और लिखित निर्देश था कि युद्ध के दौरान किसी भी किसान को खड़ी फसल को नुकसान नहीं पहुँचना चाहिए। यहाँ तक कि सैनिकों को अपने घोड़ों के लिए चारा भी किसानों से उचित मूल्य देकर खरीदने का आदेश था, वे जबनर कुछ नहीं ले सकते थे। पारदर्शी और उदार कर प्रणाली उन्होंने जागीरदारी और जमींदारी प्रथा को समाप्त कर दिया,

जो किसानों का शोषण करती थी। सरकार सीधे किसानों से संपर्क करती थी। यदि किसी वर्ष अकाल पड़ता या फसल नष्ट हो जाती, तो महाराज उस क्षेत्र का पूरा लगान माफ कर देते थे। अकाल या युद्ध से प्रभावित किसानों को दोबारा खेती शुरू करने के लिए स्वराज्य की ओर से मुफ्त में बीज, बैल और कृषि उपकरण दिए जाते थे। इसके लिए दिए जाने वाले ऋण पर कोई ब्याज नहीं लिया जाता था और किसान इसे अपनी सुविधा के अनुसार आसान किरातों में चुका सकते थे।

महाराज ने हर किले और प्रशासनिक केंद्र पर अनाज के बड़े भंडार बनवाए। संकट के समय इन भंडारों को आम जनता और किसानों के लिए खोल दिया जाता था ताकि राज्य में कोई भी भूखा न सोए। यह दिन हमें याद दिलाता है कि जब नेतृत्व निःस्वार्थ, पराक्रमी और न्यायप्रिय हो, तो विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी एक अजेय और कल्याणकारी राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है। हिंदवी स्वराज्य का अर्थ केवल भौगोलिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि सुशासन, महिला सम्मान, धार्मिक सहिष्णुता और किसान कल्याण का एक आदर्श मॉडल था। आज सदियों बाद भी, शिवाय के स्वराज्य के मूल्य हमारे राष्ट्र के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश स्तंभ हैं। उनका यह गौरवशाली इतिहास हमें याद दिलाता है कि जब दृढ़ संकल्प और न्याय की शक्ति साथ मिलती है, तो इतिहास बदला जा सकता है। इसलिए आज का दिन केवल एक तिथि नहीं, भारतीय स्वाभिमान के पुनरुत्थान का दिवस है।

-डॉ. विशाला शर्मा,
प्रोफेसर विभागाध्यक्ष एवं
शोध निर्देशिका, हिंदी विभाग,
चेतना महाविद्यालय छत्रपति
संभाजी नगर

अमरसागर गेट को मिला नया साथी, वर्षों पुराने ट्रैफिक जाम से शहरवासियों को मिली राहत



अचलदास डांगरा

जैसलमेर स्वर्णनगरी जैसलमेर के ऐतिहासिक अमरसागर गेट पर वर्षों से लगने वाली ट्रैफिक जाम आमजन के लिए बड़ा समस्या बन चुका था। रियासतकाल में निर्मित इस एकमात्र प्रवेश द्वार से प्रतिदिन हजारों लोगों का आवागमन होता था। शहर में आने वाले देशी-विदेशी सैलानियों के अलावा कचहरी, जिला अस्पताल और विभिन्न सरकारी कार्यालयों में आने-जाने वाले

लोगों को अक्सर लंबे समय तक जाम में फँसना पड़ता था। सुबह और शाम सेर के लिए निकलने वाले नागरिकों को भी इस परेशानी का सामना करना पड़ता था। शहर की बढ़ती आबादी और वाहनों की संख्या के कारण अमरसागर गेट पर स्थिति दिन-प्रतिदिन गंभीर होती जा रही थी। कई बार जाम इतना लंबा लग जाता था कि लोगों को अपने गंतव्य तक पहुँचने में काफी देरी होती थी। इससे आमजन के साथ-साथ पर्यटकों को भी असुविधा का सामना करना पड़ता था, जिससे शहर की यातायात व्यवस्था पर सवाल खड़े होने लगे थे। इसी समस्या के स्थायी समाधान के लिए वर्ष 2011 में तत्कालीन जिला कलेक्टर गिरिराज सिंह कुशवाहा के निर्देश पर तत्कालीन नगर परिषद सभापति अशोक तंवर ने नगर परिषद के सभी पार्षदों की एक विशेष बैठक बुलाई। बैठक में शहर के प्रमुख मार्गों पर बढ़ते यातायात दबाव और अमरसागर गेट पर लगने वाले जाम पर विस्तार से चर्चा की गई।



विचार-विमर्श के बाद सर्वसम्मति से यह महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया कि ऐतिहासिक अमरसागर गेट के समानांतर एक और प्रवेश द्वार का निर्माण कराया जाए, ताकि शहर में आने-जाने वाले वाहनों का दबाव विभाजित हो सके और यातायात व्यवस्था सुचारु बनाई जा सके। इस दूरदर्शी निर्णय के परिणामस्वरूप शहर को एक वैकल्पिक मार्ग मिला, जिससे अमरसागर गेट पर वर्षों से बनी हुई जाम की समस्या में

काफी हद तक राहत मिली। नए प्रवेश द्वार के निर्माण के बाद वाहनों की आवाजाही अधिक व्यवस्थित हुई और आमजन, पर्यटकों तथा विभिन्न सरकारी कार्यालयों में आने-जाने वाले लोगों को सुविधा मिलने लगी। स्थानीय नागरिकों का मानना है कि उस समय लिया गया यह निर्णय जैसलमेर की यातायात व्यवस्था के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ। इससे न केवल लोगों का

समय बचा, बल्कि शहर की पहचान बने ऐतिहासिक क्षेत्र में यातायात का दबाव भी कम हुआ। स्वर्णनगरी के विकास की इस कहानी में अमरसागर गेट के समानांतर बने नए प्रवेश द्वार को आज भी एक दूरदर्शी और जनहितकारी पहल के रूप में याद किया जाता है, जिसने हजारों लोगों को रोजाना की परेशानी से राहत दिलाई।
-अचलदास डांगरा,
वरिष्ठ पत्रकार।